शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -5
May
2025

आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ चरक संहिता का विश्लेषणात्मक अध्ययन

***डॉ.मनीषा दुनघव**
प्राचार्या एवं प्राध्यापक
आयुर्वेद संहिता एवं सिद्धान्त विभाग

****डॉ.अनुराधा तिवारी**
सहायक प्राध्यापक
आयुर्वेद संहिता एवं सिद्धान्त विभाग
आर.एन.कपूर मेमोरियल आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल, इंदौर (म.प्र.)

शोध सार

महर्षि भारद्वाज आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त करने के लिए इन्द्र के पास गये तथा स्वस्थ एवं आतुरजनों के लिए त्रिसूत्र आयुर्वेद के ज्ञान को सीखा। यही त्रिसूत्र आयुर्वेद भारद्वाज ने अग्निवेश आदि ऋषियों को सिखाया। स्वस्थ व्यक्ति में धातु साम्य करना तथा रुग्ण व्यक्ति में धातु वैषम्य को साम्यावस्था में लाना ही इस आयुर्वेद का प्रयोजन है। इन धातु वैषम्य को साम्यावस्था में लाने के लिए ऋषियों ने 6 पदार्थों को ज्ञान चक्षु से देखा, जिससे सामान्य, विशेष, द्रव्य, गुण, कर्म एवं समवाय प्रमुख है। इनके ज्ञान के आयुर्वेद का ज्ञान अपूर्ण है। क्षीण धातुओं को बढ़ा ना, सामान्य पदार्थ बढी धातुओं को साम्यावस्था में लाना ही विशष पदार्थ है। गुण, कर्म, द्रव्यों में समवाय से रहते हैं। अतः द्रव्यों, गुणों, कर्म पदार्थ का ज्ञान भी आवश्यक है। द्रव्य 9 हाते हैं, गुण 41 होते हैं तथा कर्म पदार्थ द्रव्यों में अनेक प्रकार के होते हैं। जैसे कोई द्रव्य का कर्म ज्वर, नाशक है, कोई अतिसार नाशक है, कोई चक्षुण्य, केश्य,बल्य आदि अनेकों कर्म उनमें होते हैं जिनसे चिकित्सा की जाती है। चरक संहिता सूत्र स्थान से प्रारंभ होती है चरक संहिता विषयों के अनुसार 8 भागों में विभाजित है जिसमें 120 अध्याय है, यह जो 8 भाग हैं इन्हें ही स्थान कहा गया है। चरक संहिता सूत्र स्थान से आरंभ होती है जिसमें आयुर्वेद के मूल सिद्धांतों का वर्णन मिलता है। सूत्र स्थान के अध्ययन से ही संपूर्ण संहिता की रचना का प्रयोजन स्पष्ट रूप से समझ में आ जाता है।

हिताहितं सुखं दु:खमायुस्तस्य हिताहितम्।
मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेद: स उच्यते।। (च.सु.1/41)

बीज शब्द

नित्यत्वात्, संसिद्ध, लक्षणत्वात्, त्रिस्कन्ध, ज्ञानचक्षु।

प्रस्तावना

आयुर्वेद का प्राथमिक उद्देश्य व्यक्ति के सकारात्मक स्वास्थ्य को बनाए रखना और बीमारियों का उपचार करना है; ताकि चार पुरुषार्थ प्राप्त किए जा सकें, जो तभी संभव है जब व्यक्ति स्वस्थ हो। चरक संहिता का अध्ययन करने का अंतिम लाभ धातु साम्य (शरीर के घटकों का संतुलन) प्राप्त करना है।

प्रयोजन चास्य स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणमातुरस्य विकारप्रशमनं च। (च.सु.11/26/1)

चरक और आयुर्वेद का इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है कि एक का स्मरण होने पर दूसरे का अपने आप स्मरण हो जाता है। आचार्य चरक केवल आयुर्वेद के ज्ञाता ही नहीं थे परन्तु सभी शास्त्रों के ज्ञाता थे। उनका दर्शन एवं विचार सांख्य दर्शन एवं वैशेषिक दर्शन का प्रतिनिधित्व करता है। आचार्य चरक ने शरीर को वेदना, व्याधि का आश्रय माना है, और आयुर्वेद शास्त्र को मुक्तिदाता कहा है। आरोग्यता को महान् सुख की संज्ञा देते हुए कहा है कि आरोग्यता से बल,आयु,सुख,अर्थ,धर्म,काम,मोक्ष की प्राप्ति होती है। आचार्य चरक, संहिता निर्माण के साथ-साथ वन-वन, स्थान-स्थान घूम-घूमकर रोगी व्यक्ति की, चिकित्सा सेवा किया करते थे तथा इसी कल्याणकारी कार्य तथा विचरण क्रिया के कारण उनका नाम 'चरक' प्रसिद्ध हुआ।

उद्देश्य

आज भूमंडलीकरण और उदारीकरण के दौर में हम अपनी ज्ञान परम्परा व प्राकृतिक औषधियों के ज्ञान से दूर होते जा रहे है। इस शोध पत्र लेखन का मुख्य उद्देश्य चरक संहिता के ज्ञान से सामाजिकता की प्रासंगिकता का अध्ययन करना है ।

शोध पद्धति

इस शोधपत्र लिखने के लिए विवेचनात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। इस शोध में द्वितीय स्त्रोतों का उपयोग किया गया है। शीर्षक से संबंधित संस्कृत साहित्य ग्रंथो, आलोचनात्मक शोध पत्र पत्रिकाओं के अध्ययन से सामग्री एकत्र की गई है।

Vol -3
Issue -5
May
2025

शोध विस्तार

धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष इन चार पुरुषार्थों की प्राप्ति के रोगयुक्त शरीर का जीवन दुःख का घर होता है। अर्जित कर ले, उच्च पद पर आसीन हो, लिए आरोग्य ही आधार है। मनुष्य कितना भी धन जमीन-जायदाद, घोड़ा गाड़ी, हवाई जहाज, बड़ी-बड़ी कम्पनियों का मालिक हो परन्तु यदि रोगी है, तो सभी अर्थहीन प्रतीत होते हैं तथा मोक्ष की कामना के लिए निरन्तर तप, समाधि, योगी का अभ्यास भी निरोग शरीर एवं मन से सम्भव है। अतः आरोग्य की प्राप्ति के लिए, संसार में आयुर्वेद की रचना हुई। आयुर्वेद आज हजारों साल पूर्व से ही उपयोगिता के लिए, शास्त्रों में वर्णित है। हमारे देश के जनस्वास्थ्य की आयुर्वेद एक उपवेद है। ऋग, यजुः, साम एवं अथर्ववेद में आयुर्वेद, अथर्ववेद का उपवेद है।

वस्तुतः सृष्टि के आदिकाल से ही ब्रह्मा ने वेदों की रचना की। आयुर्वेद भी प्रथम ब्रह्मा द्वारा ही प्रजापति को उपदिष्ट किया गया। प्रजापति ने अश्विनी कुमारों को, अश्विनी कुमारों ने इन्द्र को तथा इन्द्र से भारद्वाज ऋषि को आयुर्वेद का उपदिष्ट किया। पुनः भारद्वाज ऋषि ने अग्निवेश प्रमुख 6 शिष्यों को आयुर्वेद का उपदेश दिया। आयुर्वेद में चरक संहिता, सुश्रुत सहिता, तथा वाग्भट्ट रचित अष्टांग हृदय थे। बृहत्त्रयी के नाम से आज जाने जाते हैं। इनमें चरक संहिता का स्थान प्रमुख हैं।

चरक विवरण

चरक शब्द से व्यक्ति विशेष का नाम लिया जाय या चरक सम्प्रदाय का। अधिकतर विद्वानों का मत है कि चरक कृष्ण-यजुर्वेद की एक शाखा का नाम है। अतः वैदिक शाखा से सम्बन्ध रखने वाले समप्रदाय के किसी व्यक्ति का नाम चरक होगा। ऋषियों के भी 2 भेद किये गये हैं शालीन और यायावर।

'ऋषयः शालीनाः यायावराश्च' (च.चि. 1/4)

प्रथम प्रकार के ऋषि कुटी बनाकर एक स्थान पर रहते थे तथा दूसरे प्रकार के ऋषि घूमते रहते थे। इससे प्रतीत होता है कि चरक यायावर कोटि के महर्षि थे, जो किसी एक स्थान में स्थिर नहीं रहते थे। एक मत यह भी है कि चरक शेषनाग के अवतार थे। इस आधार पर कुछ विद्वान नागजाति के कोई आचार्य होंगे जिनका नाम चरक था। पतंजलि को शेषावतार

माना जाता है, अतः कुछ विद्वान चरक एवं पतंजलि आचार्य को एक ही मानते हैं। इन लोगों की मान्यता है कि योगसत्र, चरक सहिता एवं महाभाष्य के रचयिता एक ही व्यक्ति थे।

चरक संहिता निर्माण विवरण

चरक संहिता में तीन भागों का संकलन मिलता है 1. अग्निवेश तन्त्र, 2.चरक प्रतिसंस्कारित, 3. दृढबलपूरित। मूल तन्त्रकार अग्निवेश का काल 1000 ईसा पूर्व है। 2. प्रतिसंस्कर्ता चरक का ईसापूर्व दूसरी या तीसरी शताब्दी है। 3. दृढबल गुप्तकालीन है। इनका समय चौथी शताब्दी है। हठबल के द्वारा ही चरक संहिता का अंतिम प्रति संस्कार हुआ है। चरक संहिता के प्रत्येक अध्याय के अन्त में 'इति, अग्निवेश कृते तन्त्रे, चरक प्रतिसंस्कृति' ऐसा उल्लेख मिलता है। परन्तु जिन अध्यायों को आचार्य हठबल ने प्रतिसंस्कारित किया है, उनके अन्त में इत्यग्निवेश कृते तन्त्रे चरक प्रतिसंस्कृते हठबल सम्पूरिते' ऐसा पाठ मिलता है। हठ बल ने चिकित्सास्थान के 17, कल्प स्थान के 12 तथा सिद्धि स्थान 12 कुल 41 अध्यायों का सम्पर्ण या प्रतिसस्करण किया है।

समस्त संसार ने प्राणियों को कष्ट देने वाले, रोग जब तपस्या, उपवास, अध्ययन, ब्रह्मचर्य, व्रत में लीन मनुष्यों को कष्ट देने लगे, तो प्राणियों पर दया करके बहुत सारे ऋषि, हिमालय पर्वत के एक शुभस्थान में एकत्रित हुए। जिनमें, अंगिरा, जमदग्नि, वशिष्ठ, कश्यप, भृगु, आत्रेय, अगस्त्य, गौतम, भारद्वाज और 54 ऋषि थे। सभी ने एकमत से निर्णय लिया कि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, इन चार पुरुषार्थ की प्राप्त केवल आरोग्य से ही सम्भव है। रोगों की उत्पत्ति जीवन के सुख एवं कल्याण को हरण करती है। अतः रोग से बचने का उपाय खोजा जाय। सभी ने अपने ध्यानचक्षु या ज्ञानचक्षु से निर्णय लिया कि इसका उपाय इन्द्र के पास सुरक्षित है। हमसे किसी भी ऋषि को इन्द्र के पास जाकर त्रिसूत्र आयुर्वेद का ज्ञान सीखना होगा। भारद्वाज ऋषि ने स्वयं इस कार्य के लिए अपने को उपयुक्त समझा और इन्द्र के पास जाकर, त्रिसूत्र आयुर्वेद के ज्ञान को सीखा। पुनः भारद्वाज ने आत्रेय आदि ऋषियों को आयुर्वेद का ज्ञान दिया। परिणामतः ऋषियों ने अमित (दीर्घ) आयु को अर्जित किया।

त्रिसूत्र आयुर्वेद - (1) हेतु (कारण) (2) लिङ्ग (लक्षण या पहचान) (3) औषधिः। इन तीन को त्रिसूत्र चरक ने माना है। स्वस्थ व्यक्ति के लिए त्रिसूत्र अर्थात् स्वस्थ व्यक्ति का रहे,

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -5
May
2025

इसका कारण, स्वस्थ व्यक्ति के लक्षण तथा स्वस्थ व्यक्ति के लिए औषधियाँ (औषध, अन्न, विहार) क्या होनी चाहिए। उसी तरह आतुर व्यक्ति या रुग्ण व्यक्ति के कारण, रुग्ण के लक्षण तथा रोगों के रोग को दूर करने के उपायों को औषधि कहा जाता है। यहाँ पर यह अत्यन्त ही विचारणीय है कि औषधि केवल खाने वाला पदार्थ नहीं है। जिसे आजकल लोग जानते हैं, बल्कि वह सभी उपाय, जिससे आरोग्य मिलता है उसे औषधि कहते हैं।

आयु प्रकार - जिस शास्त्र में 1. हितकर आयु, 2. अहितकारी आयु, 3. सुखकारी आयु, 4. दुखहारी आयु इन चार प्रकार की आयु को प्राप्त करने के लिए, हितकारी विषयों का, अहितकारी विषयों का तथा आयु का मान (अवधि) का वर्णन हो कि वह व्यक्ति अल्पायु वाला होगा या दीर्घायु वाला होगा। इन सभी का ज्ञान वर्णित हो उसे आयुर्वेद कहते हैं।

द्रव्य विवरण - आयुर्वेद शास्त्र में द्रव्यों के दो प्रकार हैं। 1.कारण द्रव्य - 1. पृथ्वी, 2. जल, 3. तेज, 4. वायु, 5. आकाश, 6. आत्मा, 7. मन, 8. काल तथा 9. दिशा। इन नौ द्रव्यों का उपयोग आयुर्वेद में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य रक्षा के लिए होता है। 2.कार्य द्रव्य - इन्द्रिय युक्त द्रव्य को चेतन द्रव्य तथा इन्द्रिय रहित द्रव्य को अचेतन द्रव्य कहा जाता है।

गुण विवरण - गुण वह भौतिक रचना है जो प्रत्यके द्रव्यों में पायी जाती है। प्रत्येक द्रव्य अपनी भौतिक रचना के अनुसार पृथक् पृथक् गुणों का आधान करता है। इन्हीं गुणों को औषधीय गुण चर्चीतउंबवसहवपबंस चतवचमतजलद्ध एवं भौतिक गुण भी कहते हैं। शरीर भी पांच भौतिक हैं तथा द्रव्य भी पांच भौतिक हैं। अतः जिस द्रव्य में जो भी गुण होगा, शरीर में उसी गुणों को बढ़ायेगा। जैसे घृत में स्निग्ध गुण है, तो शरीर में स्निग्ध गुण को ही बढ़ायेगा। आयुर्वेद चिकित्सा द्रव्यों के गुण-कर्मों पर ही आधारित है।

"सर्वदा सर्वभावानां सामान्यं वृद्धिकारणम्,
ह्रासहेतुर्विशेषश्च, प्रवृत्तिरुभयस्य तु।" | (च.सु. 1/44)

आधुनिक विज्ञान में भी प्रत्येक द्रव्य अपने विशिष्ट रासायनिक संघटक के आधार पर ही विभिन्न प्रकार के कार्य शरीर में उत्पन्न करते हैं।

आयुर्वेद में गुणों की संख्या 41 मानी गयी है

आध्यात्मिक गुण 6 है जैसे- सुख, दुख, इच्छा, द्वेष, बुद्धि, प्रयत्न

परादि-अपरत्व आदि 10 है जैसे- परत्व, अपरत्व, युक्ति, संख्या, संयोग, विभाग, पृथक्त्व, परिमाण, संस्कार, अभ्यास।

शारिरीक गुण - गुर्वादि गुण - आयुर्वेद में द्रव्यों से रोगों की चिकित्सा की जाती है। रोग शरीर एवं मन में होते हैं। अतः शारीरिक एवं मानसिक रागों के शमन हेतु इन 41 गुणों की उपयोगिता, चिकित्सा कार्य में होती है। यदि गुणों को निम्न विधि से समझा जाय तो गुणों के ज्ञान में सरलता होती है। वायु, पित्त एवं कफ शारीरिक दोष है तथा रजः एवं तमः मानसिक दोष हैं। अर्थात् शरीर की व्याधियों, शारीरिक दोषों से तथा मानसिक व्याधियाँ मानसिक दोषों से उत्पन्न होती हैं। रुक्ष, शीत, लघु, सूक्ष्म, चल, विशद, खर ये 7 गुण वात के हैं। इनके विपरीत स्निग्ध, उष्ण, गुरू, स्थूल स्थिर,विशद पिच्छिल-श्लक्ष्ण गुणों से वायु का शमन हातो है। स्निग्ध, उष्ण, तीक्ष्ण, द्रव, सर तथा कटु एवं अम्ल रस गुणों से युक्त पित्त दोष माना गया है। विपरीत गुण वाले रुक्ष, शीत, मन्द, सान्द्र तथा स्थिर गुणों वाले द्रव्यों से पित्त दोष की शान्ति होती है। गुरु-शीत-मृदु-स्निग्ध, मधुर स्थिर, पिच्छिल गुण कफ दोष को बढ़ाते हैं तथा इनके विपरीत गुण वाले द्रव्यों के सेवन से, लघु-उष्ण, कठिन, रुक्ष, चल, विशद विपरीत गुण वाले द्रव्यों के सेवन से कफ का शमन होता है।

सार्था गुर्वादयो बुद्धिः प्रयत्नान्ताः परादयः गुणाः प्रोक्ताः | (च.स. 1/48)

मात्रा युक्त आहार एवं औषध सेवन वर्णन

चरक ने देश (भूमि, आतुर), माया (औषधि की मात्रा), काल (ऋतुजन्य, रोग की अवस्था जन्य) आदि का विचार करके केवल साध्य रोगों की ही चिकित्सा का वर्णन किया है तथा असाध्य (अरिष्ट लक्षण युक्त, मृत्यु के लक्षण उत्पन्न होने पर) रोगों की चिकित्सा नहीं बतायी है।

साध्यासाध्यविभागज्ञो ज्ञानपूर्व चिकित्सकः।
काले चारभते कर्म यप्तत साधयति ध्रुवम्।। (च.स. 10/07)

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -5
May
2025

साध्य और असाध्य रोगों के भेदों को समझने वाला वैध यदि ज्ञानपूर्वक समय से चिकित्सा प्रारम्भ करता है तो निश्चित रूप से अपना कार्य सम्पन्न कर लेता है। जो वैध असहाय रोगों की चिकित्सा करता है वह निश्चित रूप से -1. अर्थ की हानि 2.विद्या की अप्रतिष्ठा 3.यश की हानि प्राप्त करता है 4. निंदा का पात्र होता है एवं 5. रोगियों का संग्रह नहीं कर पाता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष स्वरुप यह स्पष्ट होता है कि चरकसंहिता आयुर्वेद का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ है। यह संस्कृत भाषा में है। इसके उपदेशक अत्रिपुत्र पुनर्वसु, ग्रंथकर्ता अग्निवेश और प्रतिसंस्कारक चरक हैं।चरकसंहिता की रचना दूसरी शताब्दी से भी पूर्व हुई थी। यह आठ भागों में विभक्त है जिन्हें 'स्थान' नाम दिया गया है (जैसे, निदानस्थान)। इसमें मानव शरीर से सम्बन्धित (तत्कालीन) सिद्धान्त, हेतुविज्ञान, अनेकानेक रोगों के लक्षण तथा चिकित्सा वर्णित है। चरकसंहिता में भोजन, स्वच्छता, रोगों से बचने के उपाय, चिकित्सा-शिक्षा, वैद्य, धाय और रोगी के विषय में विशद चर्चा की गयी है। स्वस्थ्य व्यक्ति के स्वास्थ्य का रक्षण एवं आतुर व्यक्ति की चिकित्सा का वर्णन किया है जो चरकसंहिता का प्रयोजन है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. चरक संहिता प्रथम भाग/सम्पादक, एच॰सी॰ कुशवाहा/ चौखम्बा ओरियन्टालिया, वाराणसी,2009
2. वाग्भट् अष्टांग संग्रह/के.आर.श्रीकण्ठ मूर्ति/चौखम्बा ओरियन्टालिया, वाराणसी, 2005
3. आयुर्वेद दर्शन/ वेदमाता गायत्री ट्रस्ट/ शान्तिकुंज, 2005
4. स्वास्थ रक्षक/पी.डी पाण्डेय/ निरोग धाम प्रकाशन, 2004
5. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसन्धान परिषद, भदोही
6. पदार्थ विज्ञान एवं आयुर्वेद का इतिहास (प्रबोध/येरावर)